वृत्तपत्राचे नांव :- नवभारत टाइम्स
वृत्तपत्र प्रकाशन ठिकाण :- मुंबई
पृष्ठ क्रमांक :- 7
दिनांक :- 22/3/11
कटिंग संख्या :- 4

सनातन धर्म की सर्वव्यापकता

धर्म का मूल उद्देश्य है मानव की शुद्धि तथा उसके अंदर स्थित परम आनंद की अनुभुति। पूजा, उपासना, आराधना, साधना, कीर्तन, भजन, तीर्थ, सत्संग आदि मन-शुद्धि तथा परमानंद की अनुभुति के साधन मात्र हैं। ये साधन भिन्न-भिन्न हो

सकते हैं। परंतु मन-शुद्धि तथा परमानंद की अनुभुति तो एक ही है।

संसार के सारे धर्म उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति में लगे हैं। किंतु धर्म के मूलतत्व को नहीं समझने के कारण मानव को एकता के सूत्र में बांधने वाला धर्म भेद तथा हिंसा का कारण बन गया है। जिस धर्म से प्रेम एवं सद्भाव, विवेक एक सविचार तथा सहानुभुति एवं करुणा की अपेक्षा थी, वही धर्म घृणा एवं विद्वेष, भ्रम एवं कुविचार तथा दुराव एवं क्रूरता को प्रोत्साहित करते हुए दिख रहा है।

उपर्युक्त भटकाव का कारण है, दो तत्वों का अभाव तथा वे दो तत्व हैं- सहिष्णुता तथा सह-अस्तित्व। सनातन-धर्म की बुनियाद इन्हीं दो तत्वों पर टिकी है। सनातन धर्म के मूल ग्रन्थ वेद ईश्वरीय सत्ता को सर्व-व्यापकात के साथ प्रतिपादित करते हैं। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश ये पंच-महाभूत उस ईश्वरीय सत्ता की बाह्य अभिव्यक्ति हैं। अत: वेदों में इन पंच महाभूतों को नमन किया गया है। ये पंच महाभूत जीवन तथा सृष्टि के आधार हैं।

उपनिषद तथा दार्शनिक ग्रन्थों में ऐसा प्रतिपादन हुआ है कि ईश्वरय चेतना ही विभिन्न स्तरों पर प्रकम्पित होती हुई आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा पृथ्वी के रूप में अवतरित हुई है। अत: सारी जड़ तथा चेतन वस्तुएं एसी ईश्वरीय चेतना से निर्मित हुई हैं। यह ईश्वरीय चेतना ऊर्जा का स्वरूप है। अत: हम अन्य शब्दों में कह सकते हैं कि यह सारी सृष्टि ऊर्जामय है। आज विज्ञान भी इस निष्कर्ष पर पहुंच चुका है कि यह सारा ब्रह्माण्ड, ऊर्जा का ही खेल हैं। दो वस्तुओं तथा जीवों में जो अंतर दिखता है, वह मौलिक नहीं, बल्कि एक ही ऊर्जा के भिन्न-भिन्न कम्पन तथा अलग-अलग मात्राओं के कारण है।

उपर्युक्त दार्शनिक विचारों पर स्थित होने के कारण सनातन धर्म सहिष्णुता तथा सह-अस्तित्व का प्रतिपादक है। मूर्ति-पूजा से लेकर अद्वैत तक सनातन धर्म की विचार धारा समायी हुई है। प्रत्येक व्यक्ति की वैचारिक परिपक्वता के अनुसार नर्सरी से लेकर पी.एच.डी. तक की व्यवस्था इस सनातन धर्म में है। अत: यहां सबके कल्याण की प्रार्थना की गई है। 'सर्वे भवन्तु सुविन:, एकं सद्ध विप्रा बहुधा वदन्ति' आति वाक्य इसी सहिष्णुता तथा यह अस्तित्व के पोषक हैं। अत: सर्वव्यापक सनातन धर्म ही इस विश्व की सुरक्षा का आधार बन सकता है।

● डॉ. भूषण कुमार उपाध्याय,
विशेष पुलिस महानिरीक्षक (आस्थापना)